जाति-धर्म रहित नागरिकता

देश में एक बड़ा वर्ग है जो चाहता है कि उसे किसी जाति, धर्म या संप्रदाय के होने से न पहचाना जाए बल्कि उसके अपने कार्य उसकी पहचान बनें। ऐसे वर्ग का नेतृत्व तमिलनाडु की रहने वालीं एमए स्नेहा कर सकती हैं, क्योंकि उन्होंने कानूनी रूप से जाति और धर्म रहित देश की पहली नागरिक होने का सर्टिफिकेट प्राप्त कर लिया है। पेशे से वकील 35 वर्षीय स्नेहा ने पहले भी कभी जन्म, स्कूल और अन्य प्रमाण पत्रों में जाति या धर्म के कॉलम को नहीं भरा था। अब तो तमिलनाडु सरकार ने भी स्नेहा को आधिकारिक तौर पर प्रमाण पत्र दिया है जिसमें उन्हें धर्म व जाति रहित महिला माना गया है। इसे देखते हुए कहा जा रहा है कि अब इस तरह के अन्य मामले भी सामने आएंगे और बहुत से लोग चाहेंगे कि वो भी स्नेहा की ही तरह जाति और धर्म रहित नागरिक होने का प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकें। टीकाकार कह रहे हैं कि इसका असर जाति और धर्म आधारित राजनीति करने वालों पर भी पड़ेगा, क्योंकि अब उन्हें इसके आधार पर भी रणनीति बनानी होगी।

भारत ने वही किया, जो उसे करना था

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मेरी हार्दिक बधाई कि उन्होंने हमारी फौज को वह करने दिया, जो उसे करना ही चाहिए था। पिछले डेढ़ हफ्ते में मैं चार बार लिख चुका हूं और कई टीवी चैनलों पर कह चुका हूं कि भारत को आतंकवादियों के अड्डों पर तत्काल हमला करना चाहिए था, चाहे वे लाहौर में हों, बहावलपुर में हों, पेशावर में हों, या काबुल में हों या कंधार में हो। यह हमला किसी देश पर नहीं, सिर्फ उसके आतंकी अड्डों पर है। हमारे विदेश सचिव ने क्या खूब शब्दों का प्रयोग किया है। उन्होंने कहा कि यह हमला 'गैर-फौजी' हमला है ? वास्तव में यह न तो किसी फौजी निशाने पर था और न ही यह नागरिकों के विरुद्ध था। इसका लक्ष्य और चरित्र अत्यंत सीमित था। यह सिर्फ आतंकियों के खिलाफ किया गया ठेठ तक पीछा (हॉट परस्यूट) था, जिसे अंतरराष्ट्रीय कानून भी मान्यता देता है। वास्तव में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान को इसका मौन स्वागत करना चाहिए था, जैसे कि पाकिस्तान की फौज और सरकार ने उसामा बिन लादेन की हत्या का किया था।

लेकिन यह भारत है। अमेरिका नहीं। पाकिस्तान की जनता इमरान को कच्चा चबा डालती। अब इमरान और पाकिस्तान क्या करे ? परमाणु-शक्ति बनने के बाद यह पहली बार हुआ कि भारत ने आगे होकर कदम बढ़ाया है। दूसरे शब्दों में अब पाकिस्तानी परमाणु-ब्लेकमेल की धमकी भी बेअसर हो गई है। इसीलिए पाकिस्तान की प्रतिक्रिया बहुत ही दिग्भ्रमित लग रही है। यदि विदेश मंत्री कहते हैं कि भारतीय विमान नियंत्रण-रेखा के अंदर बस 2-3 किमी तक आए थे और सिर्फ तीन मिनिट में ही वे डरकर वापस भाग गए तो मैं पूछता हूं कि आपको इतने बौखलाने की क्या जरुरत थी ? पाकिस्तान में आपकी सरकार के लिए शर्म-शर्म के नारे क्यों लग रहे हैं ? संसद का विशेष सत्र क्यों बुलाया जा रहा है ? अपने मनपसंद समय और स्थान पर हमले की बात क्यों कही जा रही है ? जब कुछ हुआ ही नहीं तो बात का बतंगड़ क्यों बना रहे हैं ? जहां तक भारत का सवाल है, इस सीमित और संक्षिप्त हमले का असर भारत की जनता पर अत्यंत चमत्कारी हुआ है। सारे देश में उत्साह का संचार हो गया है। विरोधी दल भी सरकार की आवाज में आवाज मिलाने को तैयार हो गए हैं।

सरकार ने जिन तीन आतंकी केंद्रों पर हमला करके 300 आतंकियों को मार गिराने का दावा किया है, उसके प्रमाण देना वह उचित समझे या न समझे लेकिन यह सत्य है कि उसके हमले से कश्मीर के अंदरुनी और बाहरी आतंकवादियों की हड्डियों में कंपकंपी दौड़ जाएगी। यदि सरकार मेरे उन सुझावों पर भी अमल करे, जो मैंने कश्मीर के अंदरुनी आतंकवाद से निपटने के लिए दिए हैं तो यह निश्चित है कि पाकिस्तान की आतंकवादी ताकते अपने आप पस्त हो जाएंगी। यह मौका है जबकि इस्लामी सहयोग संगठन के सदस्यों से सुषमा स्वराज बात करें और उनसे कहें कि वे पाकिस्तान की सरकार, फौज और जनता से कहें कि इस मामले को तूल देकर युद्ध की शक्ल न दे दें।

विचार

हवाई फौज को सलाम

पुलवामा हमले का बदला पीओके स्थित आतंकी ठिकानों पर हवाई हमले करके भारतीय वायुसेना ने ले लिया। हवाई फौज ने पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में 12 मिराज लड़ाकू विमानों की मदद से 21 मिनट तक बमबारी की, जिसमें करीब 300 आतंकी मारे गए। यह संपूर्ण देश के लिए गर्व की बात है। इसे लेकर देश की तमाम बड़ी राजनीतिक पार्टियां और नेता वायुसेना को सलाम करते हैं और उनके कार्य की प्रशंसा करते नजर आते हैं। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने ट्वीट करते हुए कहा है कि %वायुसेना के पायलटों को मैं सलाम करता हूं।% वहीं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री कमलनाथ, कांग्रेस प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने सेना को बधाई दी है। गौरतलब है कि पुलवामा हमले के बाद आतंकवादियों के खिलाफ किसी भी तरह की कार्रवाई करने के लिए संपूर्ण विपक्ष ने केंद्र को समर्थन दिया था और आज जबकि वायुसेना ने आतंकवादियों को उनके घर में सबक सिखाने जैसा काम किया तो उसे सलाम करना तो बनता ही है।

उमर अब्दुल्ला की नसीहत

जम्मू-कश्मीर को लेकर जिस तरह की बातें राष्ट्र स्तर पर हो रही हैं, उससे नेशनल कांफ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला खासे चिंतित नजर आए हैं। यही कारण है कि उन्होंने कहा है कि यदि जम्मू-कश्मीर के विशेष दर्जे से किसी तरह का खिलवाड़ हुआ तो राज्य में इसके गंभीर और दूरगामी परिणाम देखने को मिलेंगे। इससे पहले उमर कह चुके हैं कि वे हर रोज 35-ए पर हमें धमकाते हैं, लेकिन यह जान लें कि ऐसा कुछ हुआ तो घाटी के हालात अरुणाचल प्रदेश के हालात से भी बदतर हो जाएंगे। इस पर विरोधी कह रहे हैं कि जम्मू-कश्मीर की सरकारों ने यदि पहले से सही निर्णय लिए होते और हालात को बेकाबू नहीं होने दिया होता तो यह दिन आज नहीं देखने होते। फिलहाल तो अलगाववादियों को लेकर भी राजनीति शुरु हो गई है, जो कि अपने आपमें गंभीर मामला है।

बसपा किसे दे रही है झटके पर झटका

खबर है कि उत्तर प्रदेश में विपक्षी महागठबंधन से अलग हो चुकी बहुजन समाज पार्टी ने अब बिहार में भी अपनी अलग राह चुन ली है। बताया जा रहा है कि बसपा ने महागठबंधन को झटका देते हुए बिहार की सभी 40 सीटों पर चुनाव लड़ने का मन बना लिया है। ऐसे में बसपा को जदयू, भाजपा, लोजपा वाले गठबंधन एनडीए से और कांग्रेस, राजद, रालोसपा, हम व अन्य पार्टियों वाले महागठबंधन से कड़ा मुकाबला करना होगा। इसलिए राजनीतिज्ञ तो यही कह रहे हैं कि बसपा किसी और को नहीं बल्कि अपने आपको झटके पर झटका दिए जा रही है। लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद देखना होगा कि उसे किस राज्य से करारा झटका लगा है, क्योंकि अचानक नया रास्ता अख्तियार करना उसके राजनीतिक जीवन पर ब्रेक लगाने वाला भी साबित हो सकता है।

सूक्ति

रंग में वह जादू है जो रंगने वाले, भीगने वाले और देखने वाले तीनों के मन को विभोर कर देता है।

- मुक्ता

जो भारी कोलाहल में भी संगीत को सुन सकता है, वह महान उपलब्धि को प्राप्त करता है।

- डॉ. विक्रम साराभाई

विचार मंथन

सीमापार के आतंकवाद को हवाई फौज का माकूल जवाब

> हमारी वायुसेना की कार्रवाई का मकसद सिर्फ और सिर्फ आतंकवादियों को मुंह तोड़ जवाब देना था, इसलिए यह संदेश भी दे दिया गया कि यह कार्रवाई किसी देश की सरकार, सेना या आमजन के खिलाफ नहीं थी, बल्कि आतंकवाद और उनके आकाओं के खिलाफ थी।

सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ वाकई ऐसी ही किसी बड़ी कार्रवाई की दरकार भारतीय सेना से देश को रही है, जैसी कि हमारी हवाई फौज ने मंगलवार तड़के की। इस कार्रवाई में भारतीय वायुसेना ने 12 मिराज लड़ाकू विमानों के जरिए पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर और उससे आगे भी मौजूद आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया। इस जवाबी कार्रवाई में करीब 300 आतंकियों को उनके अपने ही घर में ढेर कर दिया गया। इससे जहां पुलवामा के शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर दी गई वहीं सीमापार बैठे आतंकियों के आकाओं को स्पष्ट संदेश भी दे दिया गया कि अब यदि आंख भी दिखाई तो उनका सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा। हमारी वायुसेना की कार्रवाई का मकसद सिर्फ और सिर्फ आतंकवादियों को मुंह तोड़ जवाब देना था, इसलिए यह संदेश भी दे दिया गया कि यह कार्रवाई किसी देश की सरकार, सेना या आमजन के खिलाफ नहीं थी, बल्कि आतंकवाद और उनके आकाओं के खिलाफ थी। इसलिए इससे पाकिस्तान की आवाम को भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि पाक सरकार व सेना को चाहिए कि वो इस लड़ाई में भारतीय सेना का साथ दें और आतंक के फलते-फूलते पेड़ को जड़ से उखाड़ फेंकने में मदद करें। यहां सभी को समझना होगा कि आतंकवादी कभी किसी के हितैषी नहीं हो सकते हैं। ऐसे आतंकियों को चाहे जहां हों उन्हें वहीं सबक सिखाने का वक्त आ गया है। भारतीय वायुसेना ने इसकी शुरुआत कर संपूर्ण देशवासियों को गर्व महसूस करवाया है। इस कार्रवाई के बाद देश का आत्मबल भी बढ़ा है। अब कोई सामान्यतौर पर यह सवाल नहीं करता दिखेगा कि क्या आतंकवादी यूं ही हमले कर हमारे जवानों को शहीद करते रहेंगे और हमारी सरकारें व सेना महज देखने और देखते रहने का ही काम करते रहेंगे।

इस कार्रवाई के बाद देशवासियों को भी विश्वास हो गया है कि हमारी सेना सीधे कार्रवाई कर आतंकवाद रुपी अजदहे को फन फैलाने से पहले ही कुचलने में देर नहीं करेगी। वैसे भी आतंक के खिलाफ सख्त कार्रवाई ही सुरक्षा का एकमात्र पैमाना बन चुका है। इससे पहले कि सीमापार से आतंकवादी आएं और देश के अंदर कोहराम मचाएं उससे पहले उन्हें वहीं खत्म किया जाना चाहिए, जहां उनकी जड़ें हैं। इसलिए वायुसेना की जवाबी कार्रवाई पर विदेश सचिव विजय गोखले कहते हैं कि जानकारी मिली थी कि जैश फिर से भारत में आत्मघाती हमले की योजना बना रहा है, इसलिए यह स्ट्राइक जरुरी हो गई थी। भारत ने आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के सबसे बड़े प्रशिक्षण शिविर बालाकोट पर हमला किया है, जिसमें जैश के शीर्ष कमांडरों को मार गिराया गया। बताया जा रहा है कि जिस शिविर को ध्वस्त किया गया उसे जैश प्रमुख मसूद अजहर का साला मौलाना यूसुफ अजहर उर्फ उस्ताद गौरी चला रहा था। इस प्रकार महज 21 मिनट की उड़ान और 90 सेकंड का एयर सर्जिकल स्ट्राइक ने सारी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। वैसे भी पुलवामा हमले के बाद ही अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि भारत अब कोई बड़ा और सख्त करने जा रहा है। उनका यह बयान ऐसी ही किसी सख्त कार्रवाई की ओर इशारा मात्र था, लेकिन इसे पाकिस्तान की इमरान सरकार समझ नहीं पाई और उसने तमाम बयानों और चेतावनियों को नजरअंदाज कर खुद भी देख लेने जैसी गीदड़भभकियां दे असल समस्या से सभी का ध्यान भटकाने का काम किया। पाकिस्तान सरकार तो जुबानी जमाखर्च कर गुजरते वक्त के साथ मामले को सामान्य बनाने में जुटी रही, वहीं दूसरी तरफ हिंदुस्तान की जनता दिल पर लगे गहरे घाव को दिखाने की बजाय दर्द देने वाले को सबक सिखाने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए सरकार और सेना को प्रेरित करती चली गई।

वहां इमरान सरकार ने पुलवामा हमले में पाकिस्तानी नागरिकों के हाथ होने के सबूत मांगे और पूर्व सरकारों की भांति बातें करती रही और यहां आतंकवादियों को उनके घर में मुंहतोड़ जवाब देने की तैयारी कर ली गई। आतंकवाद के प्रश्रयदाताओं को उम्मीद भी नहीं रही होगी कि इस कदर कोई उन पर कार्रवाई कर सकता है। यहां आतंकियों के खतरनाक इरादों को भांप चुकी भारतीय वायुसेना ने वही किया जो देश की सुरक्षा के लिए आवश्यक था और वहां दूसरीतरफ अब साफ तौर पर इमरान सरकार अपनों के ही सवालों से घिर गई। पाकिस्तान की पूर्व विदेशमंत्री हिना रब्बानी ने इमरान सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि देश में इमरजेंसी जैसे हालात हैं, इसके लिए प्रधानमंत्री इमरान को संसद में जवाब देना चाहिए। पाकिस्तानी संसद में इमरान सरकार के खिलाफ नारे बुलंद करते तमाम विपक्षी नेताओं ने संयुक्त संसदीय सत्र की भी मांग की। पाकिस्तान पीपल्स पार्टी के वरिष्ठ नेता खुर्शीद शाह कह रहे हैं कि संसद को साथ बैठकर फैसला करना चाहिए। अब सवाल यह है कि जब अवसर था तब तो कुछ किया नहीं गया, अब जबकि आतंकवादियों पर कार्रवाई की गई है तो फिर हायतौबा करने से आखिर क्या संदेश देना चाहते हैं। इस समय तो सभी को मिलकर आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई छेड़ना चाहिए, क्योंकि यही सही समय है जबकि आतंकवाद को जड़ से खत्म किया जा सकता है। भारत ही नहीं बल्कि तमाम पड़ोसी देशों की शांति और सहअस्तित्व के लिए यह जरुरी हो गया है कि आतंकवादियों को उनके घर पर माकूल जवाब दिया जाए।

चलो, चलें प्रधानमंत्री बने

देश में लोकसभा चुनाव आते देख सियासतदारों के मुंह में लड्डू फूटने लगे कि मैं भी अब प्रधानमंत्री बन सकता हूँ। बेला में चलो, चले प्रधानमंत्री बने की होड़ लगी हुई है। ताबड़तोड़ मेरा वोट-तेरा वोट मिलाकर करेंगे चोट की सोच से चुनाव फतह करने की तैयारी दम मार रही है। फुसफुसाहट बेमर्जी गठबंधन, मतलबी दिखावा और दुश्मन का दुश्मन दोस्त बनाने का चलन जोरों पर है। मतलब आइने की तरह बिल्कुल साफ है प्रधानमंत्री की कुर्सी जिसे पाने की जुगत में महागठबंधन नामक समूह का हर छोटा-बड़ा दल काफी मशकत कर रहा है। बस इस फिराक में की कब नरेन्द्र मोदी हटे और हम वहां डटे।

खुशफहमी बिना नेता, नीति और नियत के राजनीतिक लिप्सा शांत होने के बजाए बढ़ते क्रम में है। मुगालते में कि बिन दुल्हे की बारात ज्यादा देर नहीं चलती। बावजूद शोर-शराबा मचाने कोई आनाकानी नहीं हो रही है। जिधर देखो उधर अपनी जमीन बचाने वाला दल या नेता बाहें तानकर मोदी को निपटाने की बात कह रहा है। जैसे मोदी-मोदी चिलाने मात्र से देश का भला और सरकार बन जाएगी। पर सावन के अंधों को समझाऐ कौन इन्हें तो हर जगह हरा ही हरा दिखाई दे रहा है। कदमताल विचारधारा के परे भानुमति का कुनबा फिर तैयार हो रहा है। इस उम्मीदी में कि परिवार बचाओं, गढ़जोड़ बनाओं, वोट कबाड़ों, मोदी हराओं, सत्ता पाओं आंख दिखाओं, और मजे उड़ाओं मामला खत्म।

ये हरगिज भी नागवारा नहीं लगता क्योंकि कभी कांग्रेस के खिलाफ लड़ने वाले दल आज भाजपा के खिलाफ लामबंद होकर साथ खड़े है। किसलिए सिर्फ और सिर्फ मोदी व भाजपा विरोध के रास्ते सत्तासुख के वास्ते। इनका सिद्धांत तो रहा नहीं बताऐ किसे बचा-कुचा वजूद ही बचाले मुक्मल होगा। इसके बिना राजनैतिक दुकानदारी बंद समझो इस डर से टुकुर-टुकुर नजरे मिलाई जाने लगी है। चाहत में आनन-फानन मोदी फोबियां का इलाज ढूंडा जा रहा है ताकि आगे का राजनीति सफर अमन चैन से बिते है। उधेड़बून एकाएक सियासती चालबाजी शुरू हो गई, वोटों की गोलबंदी और मुफीद शागिंद हुंकार भरने लगे। नतीजतन कूटरचित सत्ता विरोध अभियान के पुरोधा प्रधानमंत्री बनने का स्वप्न दिन में ही देख रहे है।

चलो अच्छा है, कमशकम कोई ना सही नरेन्द्र मोदी ने तो इन टूटे हुए दिलों को मिलाकर तसली दिला दी। बानगी में पश्चिम बंगाल, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, दिल्ली और झारखंड़ समेत अन्य राज्यों में दिलजलों की दिल्लगी हो चली है। छिनाझपटी प्रधानमंत्री बनने वालों की नुराकुश्ति के क्यां कहने नुक्ताचिनी के बावजूद मिलन समारोह जोरों पर है। हमजोली आत्ममंथन के रसवादन से क्या निकलता है ये तो आने वाला वक्त बताएगा लेकिन पदलोलुपत्ता के चक्कर में रसपानी ललायित जोर अजमाईस करने में मशगूल है। कसर के असर में सामाजिक, क्षेत्रिय और सम सामयिक के नाम पर वोटबंदी का प्रभुत्व चलो, चले प्रधानमंत्री बने चलित अभियान का वाहक बनकर उभरा है। यह फिलवक्त ऊफान पर है जो थमने के बजाए बढ़ता ही जा रहा है और चुनाव तक सारी हदें पार कर देगी।

बतौर बेहतर परिणामों की उम्मीद बेईमानी के अलावे और कुछ नहीं क्योंकि ऐसी मौकापरस्ती के सब आदी है। अभी झंड़ा बुलंद होगा बाद में नफा-नुकसान के कायदे में चरण वंदन होगा। फिर नौटकी की क्या जरूरत है। देश को गुमराह और मतदाताओं को दिग्भ्रमित करने या अपने ईशारे पर नाचने वाली सरकार बनाने के लिए, तासिर तो येही लगती है। तभी अच्छे-बुरे की चिंता किये बिना देशहित को दरकिनार कर मतलब की राजनीति और सियासती दांवपेंच धडल्ले से खेला जा रहा है। अतएव दुर्भाग्य कहें या विड़ंबना इक्सवीं सदी में भी मूल्क की राजनीति तुतु-मैंमैं, बनने-बनाने-बिगड़ाने तथा काज नहीं अपितु राज करने के इर्दगिर्द घूम रही है जो जग हंसाई का कारक है। इतर मुट्ठी भर कुकरमुते दलों के राजपाठी रवैया पर अंकुश लगाकर चौपट होते लोकतंत्र और प्रधानमंत्री जैसे गौरवामयी पद को बचाया जा सकता है।

आपकी सोच पर निर्भर है कर्म

दो मित्र अक्सर एक वेश्या के पास जाया करते थे। एक शाम जब वे वहां जा रहे थे, रास्ते में किसी संत का आध्यात्मिक प्रवचन चल रहा था। एक मित्र ने कहा कि वह प्रवचन सुनना पसंद करेगा। उसने उस रोज वेश्या के यहां नहीं जाने का फैसला किया। दूसरा व्यक्ति मित्र को वहीं छोड़ वेश्या के यहां चला गया। अब जो व्यक्ति प्रवचन में बैठा था, वह अपने मित्र के विचारों में डूबा हुआ था। सोच रहा था कि वह क्या आनंद ले रहा होगा और कहां मैं इस खुश्क जगह में आ बैठा। मेरा मित्र ज्यादा बुद्धिमान है, क्योंकि उसने प्रवचन सुनने की बजाए वेश्या के यहां जाने का फैसला किया। उधर, जो आदमी वेश्या के पास बैठा था, वह सोच रहा था कि उसके मित्र ने इसकी जगह प्रवचन में बैठने का फैसला करके मुक्ति का मार्ग चुना है, जबकि मैं अपनी लालसा में खुद ही आ फंसा। प्रवचन में बैठे व्यक्ति ने वेश्या के बारे में सोचकर बुरे कर्म बटोरे। अब वही इसका दुख भोगेगा। गलत काम की कीमत आप इसलिए नहीं चुकाते, क्योंकि आप वेश्या के यहां जाते हैं; आप कीमत इसलिए चुकाते हैं क्योंकि आप चालाकी करते हैं। आप जाना वहां चाहते हैं, लेकिन सोचते हैं कि प्रवचन में जाने से आप स्वर्ग के अधिकारी बन जाएंगे। यही चालाकी आपको नरक में ले जाती है। आप जैसा महसूस करते हैं, वैसे ही आप बन जाते हैं। मान लीजिए कि आप जुआ खेलने के आदी हैं। हो सकता है कि अपने घर में मां, पत्नी या बच्चों के सामने आप जुआ को खराब बताते हों। इसका नाम तक मुंह पर नहीं लाते हों। लेकिन जैसे ही अपने गैंग से मिलते हैं, पत्ते फेंटने लगते हैं। चोरों को क्या ऐसा लगता है कि किसी को लूटना बुरा है? जब आप चोरी में असफल होते हैं, तो वे सोचते हैं कि आप अच्छे चोर नहीं हैं। उनके लिए वह एक बुरा कर्म हो जाता है। हमें ये समझना होगा कि कर्म उसी तरह से बनता है, जिस तरह आप उसे महसूस करते हैं। आप जो कर रहे हैं, उससे इसका संबंध नहीं है।

क्या पाकिस्तान मोदी को विजय श्री दिलवाएगा..?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी कांग्रेस पर चाहे यह अरोप लगाए कि ''कांग्रेस पाकिस्तान के साथ मोदी को पद से हटवाने की साजिश रच रही है'', किंतु आज की वास्तविकता व हालात कुछ ऐसे है कि पाकिस्तान के प्रति सख्त रूख अपना कर मोदी जी देशवासियों की सहानुभूति बटौरने में लगे है और इसी सहानुभूति को वोट में तब्दी करवा कर आसन्न लोकसभा चुनाव में विजयश्री हासिल करना चाहते है, और यदि 'खुदा न खास्ता' पाके के साथ युद्ध शुरू हो जाता है तो, फिर मोदी जी की पुन: सरकार बनने से कोई नहीं रोक सकता। आज के राजनेताओं ने चाहे राष्ट्रभक्ति को राजनीतिक स्वार्थ में बदल दिया हो, किंतु देश की आवाम् तो अभी भी सच्चे दिल से देशभक्त है और सर्वस्व लुटाकर अपने देश की अस्मिता को कायम रखना चाहती है।

भारत जैसे विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्री देश के लिए चुनावों के पहले हर मसले पर राजनीति करने और उसे अपने पक्ष में भुनाने की प्रक्रिया कोई नई नहीं है, फिर वह मसला राष्ट्र की अस्मिता से ही क्यों न जुड़ा हो, इसलिए आज पुलवामा काण्ड, कश्मीरी अनुच्छेद-370 व 35ए, या पाकिस्तानी सरकार के दुर्व्यवहार को लेकर देश में सत्तारूढ़ दल यह दिखाना चाहता है कि उससे बड़ा देश का हितचिंतक कोई नहीं है, इसलिए उसे ही चिरंतन काल तक सत्ता में बने रहने देना चाहिए, और इसीलिए अब प्रधानमंत्री सहित सत्तारूढ़ दल के नेताओं के भाषणों का लहजा भी बदला हुआ है, प्रधानमंत्री व सत्तारूढ़ दल के अध्यक्ष जहां अपने इन प्रयासों से 2014 के चुनावी वादों का विस्मृत करवाने का प्रयास कर रहे है, वहीं उनकी सरकार की पांच साल की सरकारील गुस्ताख्यिों को भी नजर अंदाज करवाने का प्रयास कर रहे है। अब अपने इन प्रयास में सत्तारूढ़ सरकार व

राजनीतिक दल कितने सफल हो पाते है, यह तो चुनाव परिणाम बताएगें, किंतु यह सही है कि आज कल जो धीरे-धीरे पाकिस्तान से युद्ध का वातावरण तैयार किया जा रहा है वह पाकिस्तान से जीत के साथ उसमें चुनाव में जीत का भाव भी निहित है।

.....और जहां तक प्रतिपक्षी दलों का सवाल है, यदि कटुसत्य कहा जाए तो इस देश में प्रतिपक्ष कभी इतना कमजोर नहीं रहा, जितना कि इस सयम है, प्रतिपक्षी दल पूरे देश में 'महागठबंधन' का नाटक खेल रहे है और इन नाटकों में डरावने मुखौटे लगाकर सत्तारूढ़ दल को डराने का प्रयास कर रहे है, जबकि इनकी वास्तविकता सबको पता है, और इनकी इसी असलियत का सत्तारूढ़ दल फायदा उठाता आ रहा है और जब तक ये एकमत और एकजुट नहीं होंगे तब तक ये इनकी मतवैभिन्यता का राजनीतिक फायदा उठाता रहेगा।

आज की वास्तविकता तो यह है कि आज लोकतंत्र से भी अधिक महत्वपूर्ण 'सत्ता की कुर्सी' हो गई है, जो सत्ता में है, वह उसे चिरकाल तक अपने कब्जे में रखना चाहता है और जो सत्ता से बाहर है, वह येन-केन-प्रकारेण 'सत्ता की कुर्सी' हथियाना चाहता है, इस तरह कुल मिलाकर लोकतंत्री इस देश में न 'लोक' और न ही 'तंत्र' बल्कि 'कुर्सी का खेल' (चेयर रेस) अहम हो गया है, और जहां तक 'तंत्र' का सवाल है, वह तो फिर भी 'जी-हुजूरी' करके या अपने हथकण्डे अपनाकर अपरोक्ष रूप से सत्ता के लाभ हथिया लेता है, किंतु सबसे अधिक दयनीय स्थिति 'लोक' की हो गई है, संवैधानिक रूप से देश ने उसी 'लोक' की सरकार मानी जाती है, किंतु वह स्वयं अपाहिज की जिंदगी जीने को मजबूर है, चुनावी साल में राजनीतिक दलों द्वारा उसे 'बेवकुफ' बनाने की स्पर्द्धा चलती है और उसके बाद वह वहीं दयनीय जिंदगी जीने को मजबूर हो जाता है, उसके भाग्य में अब यही स्थायी रूप से अंकित हो गया है, यद्यपि यह भी सही है कि आज का मतदाता उतना नादान नहीं रहा, जितना कि वह देश के आजाद होने के बाद प्रारंभिक तीन दशकों में था, किंतु वह इतना होशियार, वाचाल और स्वयं के हितों का जानकार भी नही हो पाया, जितना की अन्य देशों के मतदाता है। इसलिए कुल मिलाकर आज देश में सामने वाले को बेवकुफ बनाकर अपना हित साधने की स्पर्द्धा जारी है, वहीं आधुनिक भाग्यविधाता (नेतागण) ऐसा कोई सुअवसर भी नहीं चुकते जिसमें उनकी राजनीतिक स्वार्थ सिद्धी निहित हो, यहीं चिरंतनकाल से चलता आया है और आगे भी चलता रहेगा, फिर वह चाहे राष्ट्र की अस्मिता से जुड़ा कोई भी मामला क्यों न हो?